सिंचाई और बिजली की नई योजनाएं—भारतवर्ष

१९५४

सत्यमेव जयते

न्द्रीय सिंचाई व विद्युत मण्डल

प्रिय माला दूसरा संस्करण पुष्प संख्या ३

ERRATA

कृपया पृष्ठ (iv) की उपरोक्त द्वितीय पक्ति के आरम्भ में रिक्त स्थान पर "ने" तथा पृष्ठ ३ की अतिम पक्ति में "जनतास-भी" के स्थान पर "जनता—सभी" पढ़िये।

इस की प्रतियां "मैनेजर आफ पब्लिकेशन्स, सिविल लाइन्स देहली" से मूल्य पर प्राप्त हो सकती हैं।

विषय सूची

प्राक्कथन	...	...	(iii)
भारत के शक्ति-गर्भित ससाधन	...	...	१
उच्च प्राथमिकता प्राप्त योजनाएँ	...	...	३
नयी योजनाओं का स्वरूप	...	...	४
प्रथम पचवर्षीय योजनान्तर्गत प्रकल्प	...	...	४
प्रकल्प जिनका निर्माण हो रहा है—१९५४ :			
आन्ध्र	...	...	८
असम (आसाम)	...	...	१७
बिहार	...	...	१८
बम्बई	...	...	१९
हैदराबाद	...	...	२७
मद्रास	...	...	३३
मध्य भारत	...	...	३९
मध्य प्रदेश	...	...	४०
मैसूर	...	...	४१
उड़ीसा	...	...	४३
पेप्सू	...	...	४९
पजाब (भारत)	...	...	४९
सौराष्ट्र	...	...	५४
त्रावनकोर और कोचीन	...	...	५६
उत्तर प्रदेश	...	...	६१
पश्चिमी बगाल	...	...	७१
विचाराधीन प्रकल्प :			
आन्ध्र	...	...	८०
बिहार	...	...	८३
बम्बई	...	...	८४
मध्य प्रदेश	...	...	८६
मैसूर	...	...	८८
सौराष्ट्र	...	...	८८
उत्तर प्रदेश	...	...	८८
भारत में सिंचाई और शक्ति प्रकल्पों के आंकड़े	...	...	९१
उपयोगी ज्ञातव्य बातें	...	...	१००

प्राक्कथन

दूसरा संस्करण

हमारे देश के अन्दर जिन नदी-घाटी प्रकल्पों का सूत्रपात किया गया है, उनका देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में कितना महान् योगदान रहेगा, इसे सभी अनुभव करते हैं। देश की बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए खाद्यान्न की पूर्ति करने और यहाँ के प्रगतिशील औद्योगीकरण के निमित्त विद्युत शक्ति की सुविधाएं प्रदान करने के लिए भविष्य में राष्ट्र की आशाओं का केन्द्र ये ही प्रकल्प बने हुए हैं। हमारा राष्ट्र इन प्रकल्पों के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने की बाट जोह रहा है, जिससे सूखे पड़े हुए बड़े-बड़े भू-भाग लहलहाती सुनहरी फसलों की शस्य-श्यामला भूमि के रूप में परिवर्तित हो जायें और सस्ती बिजली की सुविधा से देश में औद्योगीकरण का महान् कार्य सफल हो सके।

इस पुस्तिका में उन नदी-घाटी प्रकल्पों का परिचय संक्षेप में कराया गया है जिन पर अभी काम चल रहा है, अथवा जो हाल ही में पूरे हो चुके हैं या जिन पर अभी विचार किया जा रहा है। हिन्दी में इस लोकप्रिय पुस्तिका का प्रथम संस्करण १९४८ में प्रकाशित हुआ था और यह संस्करण सिंचाई और बिजली के प्रकल्पों की १९५३ के अन्त तक की स्थिति को बताता है।

भारत ने सिंचाई और बिजली के चालू प्रकल्पों को क्रियान्वित करने और नवीन प्रकल्पों का आयोजन करने में सन् १९५० से बड़ी प्रगति की है। पुस्तिका के इस संशोधित और परिवर्धित संस्करण का उद्देश्य जनता को नदी-घाटी-विकास के क्षेत्र में केन्द्रीय और राज्य सरकारों की प्रगति से परिचित रखना है।

अंग्रेजी पुस्तिका का यह हिन्दी अनुवाद श्री ब्रजमोहन लाल, रिटायर्ड चीफ इंजीनियर, पंजाब पी. डब्लू डी. की देख-रेख में तैयार किया गया है और केन्द्रीय सिंचाई व विद्युत मंडल उनके इस सहयोग के लिए उनका बहुत अनुगृहीत है।

आशा है कि इस पुस्तिका द्वारा भारत के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योग देने वाली विविध योजनाओं के सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त करने की जनता की मांग पूरी हो सकेगी।

मोतीलाल अग्रवाल,
मंत्री,
केन्द्रीय सिंचाई व विद्युत मन्डल।

नई देहली,
मार्च १९५५

प्राक्कथन

पहला सस्करण

सन् १९४७ में केन्द्रीय सिचाई मडल (Central Board of Irrigation) अंग्रेजी में एक लोक-प्रिय पुस्तकमाला निकालना प्रारम्भ किया था। मण्डल की उस समय यह इच्छा थी कि अंग्रेज़ी जानने वाले लोगों को सिंचाई और जल-बिजली विभागों के काम की एक हल्की झलक बोल चाल की भाषा में दे दी जाय, जिससे उनका ध्यान इन विषयों की ओर आकर्षित हो।

मण्डल को इस काम में आशा से बढ़कर सफलता हुई और पुस्तकमाला के कई पुष्पों का दूसरा संस्करण शीघ्र ही निकालना पड़ा।

सन् १९४८ में कई महानुभावों ने इस माला को मुख्य भारतीय भाषाओं में भी निकालने की सम्मति दी। उनका विचार था कि अंग्रेजी न जानने वाले लोगों को भी इन विषयों का परिचय करा देना चाहिये। अनुवाद का काम हाथ में लेते ही सबसे बडी अड़चन यह दिखाई दी कि सिंचाई और जल-बिजली सम्बन्धी अंग्रेज़ी शब्दों के लिए हिन्दी कोष में ठीक ठीक शब्द ही नहीं मिलते थे। आचार्य (Doctor) रघुवीर जी के सहयोग से पहले तो कोई ३०० अंग्रेज़ी शब्दों को जिनका इस पुस्तिका में प्रयोग किया गया है हिन्दी रूप दिया गया और फिर उन्हीं की देख-रेख में इस पुस्तिका का पूरा अनुवाद हुआ। इस कृपा के लिये मण्डल आचार्य रघुवीर जी का अतीव आभारी है।

अनुवाद पूरा हो जाने पर यह विचार हुआ कि यदि इसे सिंचाई विभाग का कोई अधिकारी भी परख ले तो अच्छा हो। यह काम पूर्वी पंजाब के सिंचाई अनुवेषण-सस्था (Irrigation Research Institute) के गणितज्ञ आचार्य जयकृष्ण मलहोत्रा को सौंपा गया। जिन्होंने भाषा को भाव के अनुरूप बनाने पर और शब्दों की व्युत्पत्ति पर विशेष ध्यान दिया।

अन्त में लेखक ने अपनी सहधर्मिणी श्रीमती गुलाटी की सहायता से अनुवाद की हस्तलिपि का सशोधन और पुनः सपादन किया। सन् १९४८ में मण्डल के वार्षिक अधिवेशन में निर्णय हुआ कि अनुवाद में हिन्दी के ऐसे शब्द होने चाहियें जो अंग्रेज़ी शब्दों के भावों को ठीक-ठीक व्यक्त कर सकें। और जब तक हिन्दी शब्द लोक-प्रिय न हो जाएं, तब तक अंग्रजी और हिन्दी शब्दों को साथ-साथ काम में लाया जाये।

अनुवाद में कुछ अनुचित समय लग जाने से इस पुस्तक में दी हुई कई योजनाओं में कुछ परिवर्तन हो गया है। पर क्योंकि इस अनुवाद पर आगे ही पर्याप्त श्रम हो चुका है,

इसलिए इसे अब इन परिवर्त्तनों का समावेश किये बिना ही छपाया जा रहा है। आशा है इस पुस्तिका से पाठकों की जिज्ञासा जागृत होगी और उन्हें अपने देश की जल-सपत्ति सम्बन्धी विषयों के अधिक जानकारी प्राप्त करने की प्रेरणा होगी। उन्हें सिंचाई और जल-बिजली सम्बन्धी शब्दों और भावों का भी कुछ परिचय हो जाएगा। जिन्हें यहां एक भारतीय भाषा में पहले पहले प्रयोग किया जा रहा है।

निरंजनदास गुलाटी,
मंत्री,
केन्द्रीय सिंचाई मण्डल।

शिमला,
मार्च १९४९